अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र एवं समाज

उभरते दृष्टिकोण

Applied Ethics and Society

Emerging Perspectives

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र एवं समाज

उभरते दृष्टिकोण

Applied Ethics and Society

Emerging Perspectives

डॉ. शिवपूजन सिंह यादव
(पूर्व व्यापार कर अधिकारी, व्यापार कर विभाग, उ.प्र.)
प्राध्यापक, शोध एवं स्नातकोत्तर, दर्शनशास्त्र विभाग,
के.जी.के. कॉलेज मुरादाबाद, उ.प्र.

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र एवं समाज

उभरते दृष्टिकोण

Applied Ethics and Society

Emerging Perspectives

संस्करण : 2020

© लेखक

ISBN: 978-81-945367-0-3

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना प्रिंटर्स, दिल्ली से मुद्रित।

नमूना SAMPLE



Missing you MAA since 15th January 2017.. Sat sat naman....

आज जब हम किसी कार्य को करते है तो पूजनीय माता स्वर्गीय बुधना देवी के त्याग व आदर्श से प्रेरणा ग्रहण करते है। हम आपके संस्कारों और विचारों को और आगे ले जाने का प्रयत्न करते हुए प्रस्तुत पुस्तक 'अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र एवं समाज उभरते दृष्टिकोण' आपके चरणों में समर्पित करते है।

SAMPLE

SAMPLE

प्रस्तावना एवं आभारोक्ति

नैतिकता मानव–मूल्यों की वह व्यवस्था है जो अधिक सुखमय जीवन के लिए हमारे व्यवहार को आकार देती है। नैतिकता की सहायता से हम ईमानदारी से जीवन जीकर हमारे सम्पर्क में आने वाले लोगों से विश्वास और मैत्री स्थापित करते हैं। नैतिकता सुख की कुंजी है।

मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन अनेक शास्त्रों में अनेक दृष्टियों से किया जाता है। मानव व्यवहार, प्रकृति के व्यापारों की भांति, कार्य–कारण श्रृंखला के रूप में होता है और उसका कारणमूलक अध्ययन एवं व्याख्या की जा सकती है। किंतु प्राकृतिक व्यापारों को हम अच्छा या बुरा कहकर विशेषित नहीं करते। उदाहरणार्थ : रास्ते में अचानक वर्षा आ जाने से भीगने पर हम बादलों को कुवाच्य नहीं कहने लगते। इसके विपरीत साथी मनुष्यों के कर्मों पर हम बराबर भले–बुरे का निर्णय देते हैं। इस प्रकार निर्णय देने की सार्वभौम मानवीय प्रवृत्ति ही नैतिक दर्शन की जननी हैं। नीतिशास्त्र में हम व्यवस्थित रूप से चिंतन करते हुए यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि हमारे अच्छाई–बुराई के निर्णयों का बुद्धिग्राह्य आधार क्या है। कहा जाता है, नीतिशास्त्र नियामक अथवा आदर्शान्वेशी विज्ञान है। निश्चय ही नीतिशास्त्र के इस वर्गीकरण में कुछ तथ्य है, पर वह भ्रामक भी हो सकता है। उक्त वर्गीकरण यह धारणा उत्पन्न कर सकती है कि नीतिदर्शन का काम नैतिक व्यवहार के नियमों का अन्वेषण तथा उद्‌घाटन नहीं है, अपितु कृत्रिम ढंग से नैतिक नियमों को मानव समाज पर लाद देना है। किंतु यह धारणा गलत है। नीतिशास्त्र जिन नैतिक नियमों की खोज करता है वे स्वयं मनुष्य की मूल चेतना में निहित हैं। अवश्य ही यह चेतना विभिन्न समाजों तथा

SAMPLE

युगों में विभिन्न रूप धारण करती दिखाई देती है। इस अनेकरूपता का प्रधान कारण मानव प्रकृति की जटिलता तथा मानवीय श्रेय की विविधरूपता है। विभिन्न देश–काल के विचारक अपने समाजों के प्रचलित विधि–निषेधों में निहित नैतिक पैमानों का ही अन्वेषण करते हैं। हमारे अपने युग में ही, अनेक नई पुरानी संस्कृतियों के सम्मिलन के कारण, विचारकों के लिए यह संभव हो सकता है कि वे अनगिनत रूढ़ियों तथा सापेक्ष्य मान्यताओं से ऊपर उठकर वस्तुतः सार्वभौम नैतिक सिद्धांतों के उद्‌घाटन की ओर अग्रसर हों।

पुस्तक में कई लिखित व अलिखित स्रोतों से मदद ली गई है। मैं उन सभी विज्ञ लेखकों के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ जिनकी रचनाओ से सामग्री ग्रहण की हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ के पूर्ण होने के शुभ अवसर पर देवतुल्य पिता श्री विक्रम सिंह यादव एवं देवीतुल्य माता स्व. श्रीमती बुधना देवी को नमन करता हूँ। मुझे आशा ही नही बल्कि विश्वास है कि यह पुस्तक पाठकों के लिए अति उपयोगी सिद्ध होगी।

डॉ. शिवपूजन सिंह यादव

विषयानुक्रमणिका

प्रस्तावना एवं आभारोक्ति *v*

1. नीतिशास्त्र : विषय बोध **1–42**

–नीतिशास्त्र की परिभाषा

–नीतिशास्त्र का इतिहास

–पूर्व एवं पश्चिम में नीतिशास्त्र का विकास

–नीतिशास्त्र का मूल प्रश्न

–नीतिशास्त्र की समस्यायें

–शुभ – अशुभ के ज्ञान का साधन

–कर्मस्वातन्त्र बनाम निर्धारणवाद

–नीतिशास्त्र की प्रकृति एवं विषयक्षेत्र

–आध्यात्मिकता

–धर्म

–धर्मशास्त्र

–मूल्यमीमांसा

2. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र **43–47**

–अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र एवं मानदण्डातम नीतिशास्त्र

–अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र एवं अधिनीतिशास्त्र

नमूना SAMPLE

–अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र एवं उपयोगितावाद

3. सामाजिक–कानूनी नीतिशास्त्र **48–59**

–समलैंगिक विवाह सम्बन्धी समस्या

–समलैंगिकता

–लिव–इन–रिलेशन

–यौन नैतिकता

4. कानूनी नीतिशास्त्र **60–81**

–इच्छामृत्यु

–दयामृत्यु

–आत्महत्या

–मृत्युदण्ड

5. जैव–चिकित्सा नीतिशास्त्र **82–94**

–गर्भपात

–धर्म एवं गर्भपात

–मानव प्रतिरुपण की समस्या

–भ्रूण परीक्षण

6. पेशेवर नैतिकता **95–109**

–सरकारी सेवकों में रिश्वत की समस्या

–न्यायपालिका में भ्रष्टाचार की समस्या

–संचार माध्यमों में भ्रष्टाचार

–कारपोरेट में भ्रष्टाचार

7. व्यवसाय नीतिशास्त्र **110–123**

–व्यवसाय में नैतिकता के मुद्दे का अवलोकन

–व्यवसाय नैतिकता और आर्थिक प्रणाली की नैतिकता

नमूना SAMPLE

–व्यवसायिक नैतिकता के सैद्धान्तिक मुद्दे
–व्यवसायिक नैतिकता पर धार्मिक विचार

8. सामाजिक–राजनीतिक नीतिशास्त्र 124–151
–जातिवाद
–नक्सलवाद
–आतंकवाद
–वेश्यावृत्ति

9. पर्यावरणीय नीतिशास्त्र एवं पशु अधिकार 152–175

10. सामाजिक न्याय 176–207
–दार्शनिक दृष्टिकोण
–कानूनी निहितार्थ
–समानता
–सामाजिक प्रगति
–सामाजिक प्रगति एवं सामाजिक मूल्य

11. योग एवं आत्मविकास 208–236
–योग का अर्थ एवं परिभाषा
–सामाजिक, व्यक्तिगत, एवं आध्यात्मिक विकास के लिए योग
–अष्टांग योग
–योगासन
–क्रियायोग
–प्राणायाम

सन्दर्भ सूची– 237–238

नहीं SAMPLE

SAMPLE

1

नीतिशास्त्र : विषय बोध

नैतिकता मानव–मूल्यों की वह व्यवस्था है जो अधिक सुखमय जीवन के लिए हमारे व्यवहार को आकार देती है। नैतिकता की सहायता से हम ईमानदारी से जीवन जीकर हमारे सम्पर्क में आने वाले लोगों से विश्वास और मैत्री स्थापित करते हैं। नैतिकता सुख की कुंजी है।

मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन अनेक शास्त्रों में अनेक दृष्टियों से किया जाता है। मानव व्यवहार, प्रकृति के व्यापारों की भांति, कार्य–कारण–श्रृंखला के रूप में होता है और उसका कारण मूलक अध्ययन एवं व्याख्या की जा सकती है। मनोविज्ञान भी यही करता है। प्राकृतिक व्यापारों को हम अच्छा या बुरा कहकर विशेषित नहीं करते। उदाहरणार्थः रास्ते में अचानक वर्षा आ जाने से भीगने पर हम बादलों को कुवाच्य नहीं कहने लगते। इसके विपरीत साथी मनुष्यों के कर्मों पर हम बराबर भले–बुरे का निर्णय देते हैं। इस प्रकार निर्णय देने की सार्वभौम मानवीय प्रवृत्ति ही नैतिक दर्शन की जननी है। नीतिशास्त्र में हम व्यवस्थित रूप से चिंतन करते हुए यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि हमारे अच्छाई–बुराई के निर्णयों का बुद्धिग्राह्य आधार क्या है? कहा जाता है, आचारशास्त्र नियामक अथवा आदर्शान्वेशी विज्ञान है, जबकि मनोविज्ञान यथार्थान्वेशी–शास्त्र है। निश्चय ही शास्त्रों के इस वर्गीकरण में कुछ तथ्य है, पर वह भ्रामक भी हो सकता है। उक्त वर्गीकरण यह धारणा उत्पन्न कर सकता है कि नैतिक दर्शन का काम नैतिक व्यवहार के नियमों का अन्वेषण तथा

SAMPLE

उद्घाटन नहीं है, अपितु कृत्रिम ढंग से वैसे नियमों को मानव समाज पर लाद देना है, किंतु यह धारणा गलत है। नीतिशास्त्र जिन नैतिक नियमों की खोज करता है वे स्वयं मनुष्य की मूल चेतना में निहित हैं। अवश्य ही यह चेतना विभिन्न समाजों तथा युगों में विभिन्न रूप धारण करती दिखाई देती है। इस अनेकरूपता का प्रधान कारण मानव प्रकृति की जटिलता तथा मानवीय श्रेय की विविधरूपता है। विभिन्न देशकालों के विचारक अपने समाजों के प्रचलित विधि–निषेधों में निहित नैतिक पैमानों का ही अन्वेषण करते हैं। हमारे अपने युग में ही, अनेक नई पुरानी संस्कृतियों के सम्मिलन के कारण, विचारकों के लिए यह संभव हो सकता है कि वे अनगिनत रूढ़ियों तथा सापेक्ष्य मान्यताओं से ऊपर उठकर वस्तुतः सार्वभौम नैतिक सिद्धांतों के उद्घाटन की ओर अग्रसर हों।

नीतिशास्त्र जिसे व्यवहारदर्शन, नीतिदर्शन, नीतिविज्ञान और आचार शास्त्र भी कहते हैं, दर्शनशास्त्र की एक शाखा हैं। यद्यपि आचारशास्त्र की परिभाषा तथा विषयक्षेत्र प्रत्येक युग में मतभेद के विषय रहे हैं, फिर भी व्यापक रूप से यह कहा जा सकता है कि आचाशास्त्र में उन सामान्य सिद्धांतों का विवेचन होता है जिनके आधार पर मानवीय क्रियाओं और उद्देश्यों का मूल्याँकन सम्भव हो सके। अधिकतर लेखक और विचारक इस बात से भी सहमत हैं कि आचारशास्त्र का संबंध मुख्यतः मानदंडों और मूल्यों से है, न कि वस्तुस्थितियों के अध्ययन या खोज से। इन मानदंडों का प्रयोग न केवल व्यक्तिगत जीवन के विश्लेषण में किया जाना चाहिए वरन् सामाजिक जीवन के विश्लेषण में भी।

अच्छा और बुरा, सही और गलत, गुण और दोष, न्याय और जुर्म जैसी अवधारणाओं को परिभाषित करके, नीतिशास्त्र मानवीय नैतिकता के प्रश्नों को सुलझाने का प्रयास करता हैं। बौद्धिक समीक्षा के विषय के रूप में, नैतिक दर्शन, वर्णात्मक नीतिशास्त्र और मूल्य सिद्धांत के क्षेत्रों से भी संबंधित हैं।

दर्शनशास्त्री नीतिशास्त्र की तीन प्रमुख शाखाओ का अध्ययन करते हैं– अधि–नीतिशास्त्र, जिसका संबंध नैतिक प्रस्थापनाओं के सैद्धांतिक

अर्थ और संदर्भ से हैं, और कैसे उनके सत्य मूल्य (यदि कोई हो तो) निर्धारित किये जा सकता हैं। मानदण्डक नीतिशास्त्र, जिसका संबंध किसी नैतिक कार्यपथ के निर्धारण के तरीकों से हैं।

अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र, जिसका संबंध इस बात से हैं कि किसी विशिष्ट स्थिति या क्रिया के किसी अनुक्षेत्र में किसी व्यक्ति को क्या करना चाहिए (या उसे क्या करने की अनुमति हैं)।

इसमे वकीलो और अपने पक्षकार को जो भी सलाह दी जाती है उसी के हिसाब से पक्षकार काम करता है।

नीतिशास्त्र की परिभाषा

रशवर्थ कीडर कहते हैं कि "नीतिशास्त्र की मानक परिभाषाओं में आदर्श मानव चरित्र का विज्ञान या नैतिक कर्तव्य का विज्ञान जैसे वाक्यांश आम तौर पर शामिल रहे हैं।" रिचर्ड विलियम पॉल और लिंडा एल्डर की परिभाषा के अनुसार, ''नीतिशास्त्र एक संकल्पनाओं और सिद्धान्तों का समुच्चय हैं, जो, कौनसा व्यवहार संवेदन–समर्थ जीवों की मदद करता हैं या उन्हें नुकसान पहुँचता हैं, ये निर्धारित करने में हमारा मार्गदर्शन करता हैं"। कैम्ब्रिज डिक्शनरी ऑफ फिलोसॅफी यह कहती हैं कि ''नीतिशास्त्र शब्द का उपयोग सामान्यतः विनियमित रूप से नैतिकता के साथ होता हैं' और कभी–कभी किसी विशेष परम्परा, समूह या व्यक्ति के नैतिक सिद्धान्तों के अर्थ हेतु इसका अधिक संकीर्ण उपयोग होता हैं। पॉल और एल्डर कहते हैं कि ज्यादातर लोग सामाजिक प्रथाओं, धार्मिक आस्थाओं और विधि के अनुसार व्यवहार करने और नीतिशास्त्र के मध्य भ्रमित हो जाते हैं और नीतिशास्त्र को अकेली संकल्पना नहीं मानते, जो कि उचित नही है। नीतिशास्त्र शब्द के कई अर्थ होते हैं इसका सन्दर्भ दार्शनिक नीतिशास्त्र या नैतिक दर्शन से हो सकता हैं।

नीतिशास्त्र का इतिहास

यद्यपि नीतिशास्त्र की परिभाषा तथा क्षेत्र प्रत्येक युग में मतभेद के विषय रहे हैं, फिर भी व्यापक रूप से यह कहा जा सकता है कि नीतिशास्त्र में उन सामान्य सिद्धांतों का विवेचन होता है जिनके आधार

पर मानवीय क्रियाओं और उद्देश्यों का मूल्यांकन संभव हो सके। अधिकतर लेखक और विचारक इस बात से भी सहमत हैं कि नीतिशास्त्र का संबंध मुख्यतः मानंदडों और मूल्यों से है, न कि वस्तुस्थितियों के अध्ययन या खोज से और इन मानदंडों का प्रयोग न केवल व्यक्तिगत जीवन के विश्लेषण में किया जाना चाहिए वरन् सामाजिक जीवन के विश्लेषण में भी।

नैतिक मतो का विकास दो विभिन्न दिशाओं में हुआ है। एक ओर तो नीतिशास्त्रियों ने ''नैतिक निर्णय" का विश्लेषण करते हुए उचित–अनुचित संबंधी मानवीय विचारों के मूलभूत आधार का प्रश्न उठाया है। दूसरी ओर उन्होंने नैतिक आदर्शों तथा उन आदर्शों की सिद्धि के लिए अपनाए गए मार्गों का विवेचन किया है। नीतिशास्त्र का पहला पक्ष चिंतनशील है तो दूसरा निर्देशनशील। इन दोनों को हमें एक साथ देखना होगा, क्योंकि प्रत्यक्षरूप में दोनों संलग्न और अविभाज्य हैं।

पूर्व व पश्चिम में नीतिशास्त्र का विकास

पश्चिमी जगत् में नीतिशास्त्र के सिद्धांत जिस तरह कालक्रमानुसार एक के बाद एक सामने आए उस तरह का क्रमबद्ध विकास पौर्वात्य दर्शन के इतिहास में नहीं मिलता। पूर्व में विभिन्न नैतिक दृष्टिकोण और कभी–कभी तो परस्पर विरोधी दृष्टिकोण भी, साथ–साथ विकसित होते रहे। अतः पूर्व और पश्चिम में नीतिशास्त्र के इतिहास का अलग–अलग अध्ययन करना सुविधाजनक होगा।

भारत

भारतीय दर्शनप्रणालियों में आचरण संबंधी प्रश्नों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। किसी न किसी रूप में प्रत्येक दर्शन ने मुक्ति या मोक्ष को सामने रखा है इसलिए मुक्तिलाभ के लिए सदाचार के नियमों की समीक्षा आवश्यक हो जाती है। इस बात पर वैदिक और अवैदिक परंपराओं में किसी हद तक सामंजस्य है। आचरण संबंधी शास्त्र (स्मृतियाँ और धर्मशास्त्र) आचरण को भारत में दिशा देते हैं।

जैन दर्शन में जीवात्मा को उसकी मौलिक विशुद्धावस्था प्राप्त कराना ही जीवन का लक्ष्य बताया गया है। इस मार्ग की सबसे बड़ी

रुकावट यह है कि जैनियों ने जीवात्मा को जड़ तत्व से कलुषित कर दिया है। जिस तरह बादलों में सूर्यकिरणों का प्रकाश मंद हो जाता है, वैसे ही ''पुद्गल" या जड़ तत्व के परमाणु जीव के चैतन्य को अपवित्र कर देते हैं। इस परिस्थिति से छुटकारा पाने के लिए कर्म के ''आस्रव" को रोकना आवश्यक है। यह तभी संभव है, जब सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चरित्र, तीनों की उपलब्धि हो। जैन धर्म में आचरण के उन नियमों की विस्तृत चर्चा है जिनके द्वारा ''त्रिरत्न" प्राप्त किए जा सकते हैं। इनमें अहिंसा मुख्य है।

चार्वाक दर्शन का दृष्टिकोण पूर्णतया भौतिकवादी है। मनुष्य की सत्ता उसका शरीर है। चैतन्य शरीर का एक विशिष्ट गुण मात्र है। जीवन का लक्ष्य सुखसंपादन है। मृत्यु के बाद व्यक्तित्व का कोई भी पक्ष शेष नहीं रहता, इसलिए परलोक की चिंता व्यर्थ है। सुख के साथ दुरूख मिश्रित है, लेकिन केवल इसलिए सुखों का त्याग करना मूर्खता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने ही सुख की साधना करनी चाहिए, न कि दूसरों के।

बौद्ध दर्शन के विभिन्न संप्रदायों में ज्ञानमीमांसा तथा आदितत्व के स्वरूप के विषय में तीव्र मतभेद है। वैभाषिक और सौत्रांतिक दर्शन वास्तववादी हैं, योगाचार विज्ञानवादी और माध्यमिक शून्यवादी, लेकिन आचरण के प्रश्न पर सभी बौद्ध विचारकों ने गौतम बुद्ध के आदि उपदेशों को स्वीकार किया है। चार आर्य सत्यों में चौथा अर्थात् दुःख–निरोध मार्ग आचारशास्त्र का आधार है। इसका व्यावहारिक रूप ''मध्यम प्रतिपदा" अथवा मध्यम मार्ग है। एक ओर व्यर्थ आत्मोत्पीड़न, दूसरी ओर क्षणिक सुखों की अराधना, इन दोनों अतियों का परिहार ही सदाचरण है। मध्यम मार्ग का अवलंबन करके कार्य–कारण–श्रृंखला (प्रतीत्य समुत्पाद) का अंत किया जा सकता है। जन्म–मृत्यु के अनवरत चक्र से छुटकारा ही निर्वाण है।

महायान संप्रदाय ने निर्वाण की अधिक सकारात्मक व्याख्या की। व्यक्ति को अपने निर्वाण से ही संतुष्ट नहीं होना चाहिए। बोधिसत्व का आदर्श यह है कि स्वयं संबोधि प्राप्त करने के बाद दूसरों के कल्याण

के लिए लगातार यत्न किया जाए। प्रेम, सहानुभूति, अनुकंपा और प्राणिमात्र के प्रति मैत्री की भावना, इन सद्‌गुणों पर बौद्ध आचरणशास्त्र में विशेष जोर दिया गया है।

हिंदू दर्शन के सभी सम्प्रदायों ने, आचरणशास्त्र के संबंध में उपनिषदों और भगवद्‌गीता के मुख्य सिंद्धांतों को स्वीकार किया है। उपनिषदों ने जहाँ एक ओर परम तत्व के गहन प्रश्न को उठाया है और ब्रह्मज्ञान को ही दर्शन का यथार्थ लक्ष्य माना है वही दूसरी ओर आत्मसाधना और शील के व्यावहारिक पक्ष पर भी ध्यान दिया है।

महाभारत में भीष्म ने युधिष्ठिर को नीतिशास्त्र की शिक्षा दी है। जिसमें प्रजा के लिये कृषि, वाणिज्य आदि की व्यवस्था, अपराधियों को दंड, अमात्य, चर, गुप्तचर, सेना, सेनापति इत्यादि की नियुक्ति, दुष्टों का दमन, राष्ट्र, दुर्ग और कोष की रक्षा, धनिकों की देखरेख, दरिद्रों का भरण पोषण, युद्ध, शत्रुओं को वश में करने के साम, दाम, दंड, भेद ये चार उपाय, साधुओं की पूजा, विद्वानों का आदर, समाज और उत्सव, सभा, व्यवहार तथा इसी प्रकार की और बहुत सी बातें आई हैं। नीति विषय पर कई प्राचीन पुस्तकें हैं, जैसे– शुक्रनीति, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कामंदकीय नीतिसार इत्यादि है। ब्रह्मविद्या और योगशास्त्र का समन्वय कराने के उद्देश्य से निष्काम कर्म का आदर्श गीता में प्रतिपादित किया गया है। अकर्मण्यता न तो स्वतंत्रता का लक्ष्य है, न आध्यात्मिक ज्ञान का। कर्मसन्यास से श्रेयस्कर है फलाशक्ति त्यागकर कर्तव्य करते रहना। सदाचार के लिए धैर्य, मानसिक संतुलन और आत्मबुद्धि अनिवार्य है। ईश्वरभक्ति और ज्ञान से भी मनुष्य का जीवन परिष्कृत होकर कर्मयोग में प्रवृत्त होता है।

आदि शंकराचार्य के अनुसार गीता का मूल दर्शन अद्वैतवादी है। मुक्ति का एकमेव साधन ज्ञान है। ज्ञान और कर्म में विरोध है और दोनों का समन्वय असंभव है। फिर भी शंकराचार्य ने यह स्वीकार किया कि आत्मशुद्धि की प्रारंभिक मंजिलों में कर्मों का भी मूल्य है।

रामानुज ने भक्तिमार्ग की महत्ता को ही उपनिषदों और गीता का मुख्य संदेश माना है। मध्ययुग के भारतीय आचारशास्त्र पर, अद्वैत वेदांत

की तुलना में, भक्तिमार्ग से प्रेरणा लेनेवाली वैष्णव परंपरा का ही अधिक प्रभाव पड़ा। इस्लाम के सूफी मत से इस प्रवृत्ति को बल मिला। व्यापक रूप से यह कहा जा सकता है कि मध्ययुगीन आचारशास्त्र, जिसका प्रतिबिम्ब दार्शनिक ग्रंथों की अपेक्षा संतकाव्य में अधिक स्पष्ट रूप से मिलता है, जो मानवतावादी है।

आधुनिक काल में गांधीवाद में भारतीय आचारशास्त्र की सभी स्वस्थ परंपराओं का समन्वय मिलता है। उपनिषदों की आत्मसाधना, जैनो की अहिंसा, बुद्ध की अनुकंपा और प्रेम, गीता का कर्मयोग, इस्लाम का विश्वबंधुत्व, इन सभी के लिए गांधीवाद में स्थान है। इन आदर्शों को महात्मा गांधी का आचारशास्त्र, देशकालातीत समस्याओं को उठाते हुए भी, भारतीय संस्कृति के मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है।

चीन

आचारशास्त्र को दर्शन और धर्मशास्त्र से पृथक् सभी प्राचीन सभ्यताओं के अध्ययन में कठिन है, लेकिन पश्चिमी जगत् की अपेक्षा पूर्वी जगत् के सांस्कृतिक इतिहास में यह कठिनाई और भी तीव्रता से सामने आती है।

चीन के दार्शनिक, धार्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक मूल्यों के दो आदि स्रोत हैं –ताओवाद और कल्फूचीवाद"। इनमें आपसी विरोध होते हुए भी इन दोनों का समन्वय ही, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, चीनी विचारकों का लक्ष्य रहा है। आगे चलकर एक तीसरी विचारधारा ने चीन में पदार्पण किया, जिसे व्यापक रूप से बौद्ध विचारधारा कहा जा सकता है।

लाओत्से (ल. 570 ई.पू.)– ताओ के अनुसार प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करना ही शुभ है। इसके लिए आवश्यक सद्‌गुण है सरलता, मृदुलता, सौन्दर्यप्रेम और शांतिप्रियता। मानव को अपना जीवन स्वाभाविक और ऋजु बनाना चाहिए। इस ताओमार्ग का प्रवर्तक लाओत्सू था।

कल्फूशस (551 से 479 ई.पू.)– कन्फूशस का दृष्टिकोण इससे मूलतया भिन्न है। इसके अनुसार जीवन की पूर्णतम साधना ही मनुष्य का कर्तव्य है। यह कर्तव्य उसे समाज के सदस्य की हैसियत से ही

निभाना है। कार्यसिद्धि और पुरुषार्थ ही वास्तविक शुभ है। सदाचार का आधार है संतुलित जीवन और संतुलित जीवन के दो सिद्धांत हैं। चुंग का सिद्धांत अर्थात् अपने व्यक्तित्व की उच्चतम मांगों को संतुष्ट करते रहो और ''शू" का सिद्धांत, अर्थात् विश्व में समस्वरता निर्माण करते हुए जीवन व्यतीत करो। अरस्तू के सुनहरे मध्यम मार्ग की तरह कन्फूशस का आचारशास्त्र भी अतिरेक विरोधी है।

मेंशिसय (371 से 198 ई.पू.)– मेंशियस का आचारशास्त्र कन्फूशस के सिद्धांत पर ही आधारित है, परंतु उसमें समाजकल्याण की अपेक्षा मानववाद पर अधिक जोर दिया गया है।

अनेक चीनी दार्शनिक ताओ के रहस्यवाद और अतिव्यक्तिवाद से भी असंतुष्ट थे और कन्फूशस के परंपराप्रधान, औपचारिक उपदेशों से भी। इसलिए बहुत से ऐसे पंथों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने या तो समझौते का मार्ग अपनाया या जीवन के किसी विशिष्ट पक्ष को लेकर एक नए आचारदर्शन की सृष्टि की। उदाहरणस्वरूप– मोत्सू का पंथ उपयोगितावादी था। सदाचरण का मापदंड अधिकतम उपयोग है, परंतु इसका साधन है प्रेम या मैत्री। संघर्ष इसलिए अनैतिक है कि वह अनुपयोगी और अपव्ययशील बन जाता है। फाशिया पंथ ने आचारशास्त्र को राजनीति के समीप पहुँचा दिया और कहा कि राजसत्ता तथा विधान से ही सदाचार की रक्षा की जा सकती है।

ताओ और कन्फूशसवाद का समन्वय कराने का उत्कट प्रयास ''यिन–याँग" सिंद्धांत में देखा जा सकता है। विश्व में दो शक्तियाँ लगातार काम करती रहती हैं। याँग, जो क्रियाशील, सकारात्मक, पुरुषोचित है और यिन, जो निष्क्रिय, नकारात्मक, स्त्रियोचित है। प्रत्येक वस्तु, संस्था और संबंध में ये दोनों ही प्रवृत्तियाँ प्रतिबिंबित हैं। इनका उचित मात्रा में वास्तव्य ही शुभ परिस्थिति है। ऐसी परिस्थिति के निर्माण में हाथ बटाना मानव का कर्तव्य है।

मध्ययुगीन चीनी आचारशास्त्र पर बौद्ध विचारों की स्पष्ट छाप है। थेरवाद की अपेक्षा महायान का और विशेषतः माध्यमिक दर्शन का, चीन में अधिक तेजी से विकास हुआ। परंतु नागार्जुन के शून्यवाद को